Krishi Kumbh
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769
कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका
खण्ड 04 भाग 01, (जुन, 2024)
पृष्ठ संख्या 65–67

एवोकॅडो (नासपती) की खेती

डॉ. आशीष बैंकर[1] एवं डॉ. सुहास माने[2]
[1]जेनेटिक्स और प्लांट ब्रीडिंग में पीएचडी,
[2]सहायक प्राध्यापक, श्री वैष्णव कृषि संस्थान,
श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।
Email Id: – suhasmane@svvv.edu.in

एवोकॅडो एक विदेशी फल है। विश्व में एवोकॅडो की खेती सबसे अधिक लैटिन अमेरिका में होती है। आज कल भारत में भी इसकी खेती देखने को मिल रही है। एवोकॅडो या बट्टर फ्रूट स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी होते हैं और ये आजकल काफी प्रचलन में भी हैं। दक्षिण अमेरिका और लेटिन के बहुत से व्यंजनों जैसे :– चिपोतले चिलीस, गुयाकमोले, चोरीजों ब्रेकफास्टस और टोमेटिल्लो सूप में एवोकॅडोफल का उपयोग अधिक किया जाता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षो से भारत में भी इस फल का इस्तेमाल तरह–तरह के व्यंजनों को बनाने के लिए किया जाने लगा है, इसमे स्वादिष्ट शेक्स, पकवान और डेजर्ट के उपयोग से पहचान मिली है। इसके फलो में स्वास्थ संबंधित पोषक तत्व ओमेगा –3 फैटी एसिड, एवोकॅडो फाइबर, विटामिन ए, बी, सी, ई और पोटेशियम युक्त पोषक तत्व मौजूद होते है, जो हमें तनाव से लड़ने में सहायता प्रदान करते है। इसलिए दिन–प्रतिदिन इसकी मांग बढ़ रही है।

दक्षिण मध्य मैक्सिको में इसकी खेती मुख्य रूप से की जाती है, तथा भारत में अब इसे उगाया जाने लगा है। यदि आप एवोकॅडो की खेती करने का मन बना रहे है, तो इस लेख में हम आपको एवोकॅडो की खेती कैसे करें और एवोकॅडो फल कहाँ पाया जाता है तथा इसकी कीमत कितनी होती है इसके बारे में बताएँगे।

भारत में एवोकॅडो की खेती

भारत में एवोकॅडो की खेती बहुत ही कम मात्रा में की जाती है, उनमे तमिलनाडु की पहाड़ी ढलानों, के साथ–साथ केरल और कर्नाटक का कूर्ग भाग, हरियाणा, पंजाब के ऊपरी भाग में इसकी खेती की जाती है। पूर्वी हिमाचल के सिक्किम राज्य में तकरीबन 800 से 1600 मीटर की ऊंचाई पर एवोकॅडो की खेती की जाती है। एवोकॅडो की खेती भारत में मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल, हरियाणा, पंजाब के ऊपरी भाग में इसकी खेती की जाती है।

एवोकॅडो फल क्या है ?

एवोकॅडो का वैज्ञानिक नाम पर्सिया अमरीकाना है। यह एक तरह का खास फल है जिसकी सर्वप्रथम उत्पत्ति तकरीबन 7 हजार वर्ष पूर्व दक्षिणी मैक्सिको और कोलंबिया शहर में हुई थी। यह बेरी की तरह दिखने वाला बड़े आकार का गूदेदार फल होता है, जिसके अंदर एक बड़ा बीज निकलता है। जिस वजह से इसे नासपती नाम से भी जानते है।

आप एवोकॅडो के चमत्कारी लाभों के बारे में जानकर निश्चिंत रूप से आश्चर्यचकित हो जायेंगे। एवोकॅडो आमतौर पर कच्चा ही खाया जाता है, इसके अतिरिक्त के इसका प्रयोग मिठाई और सलाद के रूप में भी किया जाता है। एवोकॅडो विभिन्न पोषक तत्वों, विटामिन और खनिजों में समृद्ध हैं। यह एकल संतृप्त फैटी एसिड का एक अच्छा स्रोत भी हैं और इसमें शुगर भी बहुत कम मात्रा में होता है। इसके अतिरिक्त यह ऊर्जा का एक अच्छा स्रोत हैं और इसमें कई आवश्यक विटामिन और खनिज उपस्थित होते हैं। एवोकॅडो में कैल्शियम, लौह, मैग्नीशियम, पोटेशियम, तांबा, मैंगनीज, फॉस्फोरस और जस्त होता है। एवोकॅडो का सेवन मानव शरीर के लिए फायदेमंद होता है, जो इस प्रकार है:–

- एवोकॅडो का सेवन हृदय स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी होता है,
- पाचन शक्ति को मजबूत करे,
- वजन घटाने में मददगार,
- आँखों की रौशनी को बढ़ाता है,
- एवोकॅडो कैंसर के जोखिम से कम करता है,
- मौखिक स्वास्थ्य में लाभदायक,
- हड्डियों को मजबूत करे,
- लिवर को स्वास्थ करने में सहायक,
- किडनी को सुरक्षा प्रदान करे,
- डायबिटीज को नियंत्रित करे,
- दिमाग को विकसित करे,
- झुर्रियों को कम करे,
- सोराइसिस में लाभकारी,
- बालों को मजबूत बनाये,
- स्तन कैंसर और प्रोस्टेट कैंसर इलाज में लाभदायक है,

एवोकॅडो की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

एवोकॅडो दक्षिण अमरीकी उपमहाद्वीप का पौधा है, जिस वजह से इसके पौधों को उष्ण कटिबंध जलवायु की आवश्यकता होती है। 20 से 30 डिग्री तापमान वाले क्षेत्र जहां पर 60 फीसदी तक नमी पायी जाती है, वहां इसकी पैदावार अच्छी प्राप्त होती है। इसके पौधे ठंडी में 5 डिग्री तक के तापमान को आसानी से सहन कर लेते है, किन्तु 5 डिग्री से कम तापमान होने पर पौधा खराब होने लगता है। इसके अलावा 40 डिग्री से अधिक तापमान होने पर फल और फूल दोनों ही मुरझा कर गिरने लगते है। जिस वजह से इन्हे तमिलनाडु और केरल में मुख्य रूप से उगाते है।

एवोकॅडो की खेती के लिए भूमि

लाल मिट्टी का क्षेत्र एवोकॅडो की खेती के लिए सर्वोत्तम है क्योंकि, यहां पर तापमान 40 के आसपास इतनी आसानी से नहीं पहुंचपाता तथा भूमि का पीएचमान 5–6 तक होना चाहिए। भारत के ज्यादातर भागो में लाल मिट्टी मौजूद होती है, तथा लाल मिट्टी को उत्पादन के लिहाज से अच्छा नहीं माना जाता है। क्योकि लाल मिट्टी में पानी का रुकाव नहीं होता है, जिससे मिट्टी में कम चिकनाई होती है। लेटेराइट मिट्टी में अधिक मात्रा में चिकनाई पायी जाती है, जिस वजह से लेटेराइट भूमि एवोकॅडो की खेती के लिए उपयुक्त होती है। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, केरल, महाराष्ट्र का पश्चिमी घाट क्षेत्र, कर्नाटक का कूर्ग भाग, तमिलनाडु के कुछ भाग और हरियाणा, पंजाब के ऊपरी भाग तथा हिमाचल के निचले भाग में इसकी खेती आसानी से कर सकते है।

वर्षा :

इसके पौधों को 50–60 प्रतिशत नमी की जरूरत होती है। एवोकॅडो की अच्छी पैदावार के लिए प्रति वर्ष 100 सेमी से अधिक वर्षा की जरूरत होती है। राजस्थान, उत्तरी गुजरात और महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ भागों को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्र वांछित या उससे अधिक वर्षा वाले क्षेत्र हैं। जहां पर एवोकैडोस की पैदावार की जा सकती है।

एवोकॅडो की उन्नत किस्में

पूरी दुनिया में इसकी कई किस्मो को उगाया जाता है, जिसमे से हास एवोकॅडो सबसे लोकप्रिय किस्म है। हास एवोकॅडो किस्म के फल को पोषक तत्व के मामले में महारत हासिल है। भारत में एवोकॅडो की उगाई जाने वाली किस्मे इस प्रकार है:–

- फुएर्टे
- पिंकर्टन
- हैस
- पर्पल
- पोलक
- ग्रीन
- राउंड
- पेराडेनिया पर्पल हाइब्रिड
- ट्रैप
- लॉन्ग

एवोकॅडो फसल के लिए भूमि की तैयारी

सबसे पहले खेत की गहरी जुताई कर खरपतवार को निकाल दिया जाता है। इसके बाद खेत में पानी लगाकर पलेव कर देते है, पलेव से खेत की मिट्टी नम हो जाती है, नम भूमि में रोटावेटर लगाकर चलाने से मिट्टी भुरभुरी हो जाती है।

भुरभुरी मिट्टी को पाटा लगाकर समतल करने के बाद खेत में पौध रोपाई के लिए 90 X 90 सेमी आकार वाले गड्ढो को तैयार कर लेते है। इसके बाद इन गड्ढो में मिट्टी के साथ 1:1 के अनुपात में खाद को मिट्टी में मिलाकर फरवरी के माह में भर दिया जाता है। पौधों को 8 से 10 मीटर की दूरी पर लगाया जाता है।

एवोकॅडो लगाने की प्रक्रिया

एवोकॅडोके बीज से पौध को तैयार कर उनकी रोपाई की जाती है। इसके लिए बीजो को 5 डिग्री तापमान या फिर सूखे पीट में भंडारित कर तैयार किया जाता है। इसके फलो से लिए गए बीजो को पॉलीथीन बैग या नर्सरी बेड पर सीधे तौर पर बुवाई के लिए इस्तेमाल करते है। नर्सरी में बीजो को 6 माह तक उगाने के बाद खेत में लगाने के लिए निकाल लेते है।

एवोकॅडो की सिंचाई

एवोकॅडो के फलों को नमी की जरूरत होती है। इसलिए खेत की पहली सिंचाई पौध रोपाई के तुरंत बाद की जाती है। इसके बाद शुष्क और गर्म जलवायु में पौधों को 3 से 4 सप्ताह में पानी देना होता है। सर्दियों के मौसम में मल्चिंग विधि का इस्तेमाल कर नमी की कमी से बचाव किया जाता है। बारिश के मौसम में जरूरत पड़ने पर ही पौधों को पानी दे, तथा जल भराव होने पर खेत से पानी निकाल दे। इसलिए फसल की सिंचाई में ड्रिप विधि का इस्तेमाल करे।

एवोकॅडो की फसल में खरपतवार की रोकथाम

एवोकॅडो की फसल को खरपतवार से बचाने के लिए निराई–गुड़ाई की जाती है। इसके अतिरिक्त जब पौधे छोटे होते है, तब रासायनिक तरीके से खरपतवार को नष्ट करते हैं। इसके लिए खरपतवारनाशी दवाइयों का इस्तेमाल किया जाता है।

एवोकॅडो में पोषक तत्व प्रबंधन

प्रथम वर्ष में प्रत्येक पेड़ के लिए 100 ग्राम नाइट्रोजन मार्च / अप्रैल में और सितम्बर / अक्टूबर में दी जानी है। दुसरे साल 150 ग्राम, तिसरे साल 200 ग्राम, चौथे साल 250 ग्राम, पंचवे साल 300 ग्राम, छठा साल 350 ग्राम और सातवें साल में 400 ग्राम, साल में दो बार (मार्च/अप्रैल में और सितम्बर/अक्टूबर में) दिया जाए। इसके अलावा, 250 ग्राम फास्फोरस और 450 ग्राम पोटाश भी हर साल प्रत्येक पेड़ के लिए देना चाहिए। फूल आने की अवस्था में बोरोन भी देना जरूरी है। पोषक तत्वों की आवश्यकता मिट्टी के प्रकार, लगाई गई किस्म, मिट्टी परीक्षण के परिणाम आदि के आधार पर भिन्न हो सकती है।

एवोकॅडो फसल कीट, रोग व उपचार

एवोकॅडो की फसल में स्केल्स, माइलबग्स और माइट्स जैसे सामान्य कीट आक्रमण करते है द्य जिसके बचाव के लिए उपयुक्त कीट नाशक का छिड़काव किया जाता है। एवोकॅडो के खेत में फसल पर पत्ती का धब्बा, जड़ सड़न और फलों का धब्बा रोग आक्रमण करते है। जिसमे जड़ सड़न रोग से बचाव के लिए पौध रोपाई से पूर्व मिट्टी में मेटलैक्सिल को मिलाया जाता है। इसके अलावा कृषि विभाग या बागवानी विभाग से संपर्क कर रोग से संबंधित दवाइयों का इस्तेमाल कर रोगो की रोकथाम की जाती है।

एवोकॅडो फसल की कटाई

एवोकॅडो का फल पौध रोपाई के 5 से 6 वर्ष पश्चात् तुड़ाई के लिए तैयार हो जाता है। इस दौरान आपको एवोकॅडो के खेत से दो तरह के फल प्राप्त हो जाते है, जो हरे और बैगनी रंग के होते है। इसमें बैगनी किस्म वाले फल का रंग बैंगनी से मैरून में परिवर्तित हो जाता है, तथा हरे रंग वाले फल हरे से पीले रंग में बदल जाते है। पूर्ण रूप से तैयार एवोकॅडो के फल का बीज पीले–सफेद से गहरे भूरे रंग का हो जाता है। कटाई के बाद भी इसके फल नरम होते है, जिन्हे पकने में 5 से 10 दिन का समय लगता है।

एवोकॅडो का उत्पादन और आय

एवोकॅडो की पैदावार उन्नत किस्म, खेत प्रबंधन और पेड़ की उम्र पर निर्भर करती है। सामान्य तौर पर इसका एक पेड़ 200 से 500 फलों की पैदावार दे देता है, तथा 10 से 12 वर्ष पुराने वृक्ष से 300 से 400 फल मिल जाते है। एवोकॅडो का बाजारी भाव गुणवत्ता के अनुसार 200 से 400 रूपए प्रति किलो होता है, जिससे किसान भाई एवोकॅडो की फसल से अधिक मात्रा में मुनाफा कमा सकते है।